वार्तालाप नंबर–531, खोजापाली (उड़ीसा) वार्तालाप, ता– 10.3.08,
Disc.CD-531, dated10.3.08 at Khojapali (Orissa)

जिज्ञासु – मेरे को कुछ पता नहीं, मैं उड़ीसी हूँ। मेरे अन्तर की बात आप जान लो।
बाबा – अगर बाबा सबके अन्तर की बात जान लेवें, 500–700 करोड़ मनुष्य हैं दुनियाँ में और सबके अंतर की बात जान लेवें, तो बाबा को साकार में आने की दरकार है? फिर बातचीत करने की दरकार है? फिर तो ऊपर बैठ–बैठे ही सब कुछ जान लेवें। जान के क्या करेंगे? एक–एक के दिल को जानने से तो कुछ नहीं होगा। पुरुषार्थ करेंगे तो प्राप्ति होगी। बाप पुरुषार्थ का रास्ता बताते हैं।
Student: I don't know anything; I belong to Orissa. Read whatever is in my mind.
Baba: If Baba reads everybody's mind; there are 500-700 crore human beings in the world and if he reads everybody's mind, is there a need for Baba to come in a corporeal form? Then is there a need to talk? Then He would know everything while sitting above (i.e. in the soul world). What would He do by knowing? Nothing will happen by reading everybody's mind. One can achieve attainments by making efforts. The Father shows the path to make efforts.

समय – 01.25
जिज्ञासु – जो सूक्ष्म शरीर होते हैं, उसमें ज्यादा पावर आती है। वो पावर ...
बाबा – स्थूल शरीर के मुकाबले सूक्ष्म शरीर में पावर ज्यादा होती है।
जिज्ञासु – वो पावर कहाँ से आती है?
Time: 01.25
Student: Those who have a subtle body have more power. That power...
Baba: When compared to the physical body, the subtle body has more power.
Student: Where does that power come from?

बाबा – एक सूक्ष्म होता है एटम, जिससे एटम बम बनता है। एटम बहुत सूक्ष्म होता है। तो ज्यादा ताकतवर हो जाता है। जो जितना स्थूल बुद्धि होगा वो ज्यादा पावरफुल होगा या सूक्ष्म बुद्धि होगा (वो) ज्यादा पावरफुल होगा? एक सूक्ष्म बुद्धि होती है और एक स्थूल बुद्धि होती है। तो मोटी बुद्धि अच्छी या महीन बुद्धि अच्छी? कहते हैं महीन बुद्धि अच्छी। क्यों? क्योंकि जो महीन चीज़ होती है, वो ज्यादा गहराई में जा सकती है। जितना मोटा होगा उतना कम अक्ल माना जाता है। ऐसे ही एटम की गति है। एटम जितना सूक्ष्म होता है, ज्यादा पावरफुल हो जाता है।
Baba: One is a subtle atom, through which atom bombs are made. Atom is very subtle. So, they have more power. Will the one, who has more gross-intellect (dull headed) be more powerful or will the one who has a subtle intellect be more powerful? One is a subtle intellect and one is a gross (dull) intellect. So, is a dull intellect (*moti buddhi*) better or is a sharp intellect (*maheen buddhi*) better? It is said that a sharp intellect is better. Why? It is because a minute thing can go more deeply. The fatter someone is, the lesser the intellectual level he is considered to have. Similar is the dynamics of the atom. The subtler an atom is, the more powerful it becomes.

ऐसे ही मनुष्य आत्माएँ जब स्थूल शरीर में बंधी हुई हैं, तो उनमें कम ताकत होती है और स्थूल शरीर के बंधन से आत्मा छूट जाती है, सूक्ष्म शरीर धारण करती है तो ज्यादा पावरफुल हो जाती है। जहाँ चाहे वहाँ घूम सकती है। जहाँ चाहे एक सेकेण्ड में आना–जाना कर सकती है क्योंकि स्थूल का बंधन नहीं रह गया। आत्मिक स्टेज बढ़ती है सूक्ष्मता की ओर जाने से, लेकिन सूक्ष्म शरीर भी सम्पन्न नहीं है। सूक्ष्म शरीर से भी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ज्यादा अति सूक्ष्म है कारण शरीर, जिसे बिन्दु आत्मा कहते हैं। सूक्ष्म शरीर के बंधंन से भी परे बन जाती है और जो आत्मा बनना सीख जाता है, वो कोई में भी प्रवेश करके उसकी बुद्धि को घुमा करके फिर वापस अपने शरीर में प्रवेश कर सकता है। वो ज्यादा पावरफुल हो गया।

Similarly, when human souls are bound in the physical body, they have lesser power and when the soul becomes free from the bondage of the physical body, when it assumes a subtle body, it becomes more powerful. It can move wherever it wants. It can come and go wherever it wants in a second because there is no bondage of the physical (body). By moving towards subtlity (*sookshmataa*) the soul conscious stage increases, but the subtle body is also not perfect. The causal body, which is called a point-like soul, is subtler than the subtle body. It becomes free from the bondage of even the subtle body and the one who learns to become a soul can enter into anyone, mould his intellect and return to his own body. That one is more powerful.

समय – 04.08
जिज्ञासु – बाबा, शिव के साथ राम को क्यों जोड़ दिया?
बाबा – शिव के साथ राम को नहीं जोड़ा गया। शिव के साथ शंकर को जोड़ा जाता है। शिव–शंकर भोलेनाथ। ऐसे नहीं कहा जाता "शिव–राम भोलेनाथ"। शिव–शंकर को इसलिए जोड़ा गया कि शंकर में शिव आ करके मुकर्रर रूप से प्रवेश करते हैं। वो शंकर ही देवताओं में महादेव गाया जाता है। देवताओं में, देव आत्माओं में बड़े ते बड़ा देवता बनने का पुरुषार्थ करने वाला शंकर कहा जाता है और शंकर कोई एक आत्मा का नाम नहीं है। शंकर का अर्थ ही है मिक्स। ऐसा मिक्सचरिटी का साकार पार्ट, जो साकार होते हुए भी निराकारी स्टेज का भी पार्ट बजाता है, साकार होते हुए भी आकारी मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज का भी पार्ट बजाता है और साकारी पार्ट भी बजाता है।

Time: 04.08
Student: Baba, why has the name of Ram been suffixed to Shiv?
Baba: The name of Ram has not been suffixed to Shiv. The name of Shankar is suffixed to Shiv. Shiv-Shankar Bholeynath. It is not said – 'Shiv-Ram Bholeynath'. Shiv and Shankar have been clubbed because Shiv comes in Shankar and enters in a permanent form. It is Shankar who is praised as the greatest deity (*mahadev*) among the deities. Shankar is said to be the one who makes effort to become the highest among all the deities, all the deity souls. And Shankar is not the name of just one soul. Shankar itself means 'mix'. It is a corporeal part of mixturity, in which he plays the part of incorporeal stage in spite of being corporeal, plays a part of the stage of subtle thinking and churning as well as the corporeal part.

एक ही शरीर में तीन तरह की आत्माएँ कार्य करती हैं। एक निराकार शिव, दूसरा आकारी ब्रह्मा (दादा लेखराज) की सोल और तीसरा वो साकार मनुष्य तन जिस तन में षिव को प्रवेश करके नर से नारायण बनाना होता है। इसलिए शिव–शंकर का गायन है, मिला करके एक करने का। शिव–राम का गायन नहीं है, शिव–कृष्ण का गायन नहीं है, शिव–ब्रह्मा का गायन नहीं है, शिव–विष्णु का गायन नहीं है, शिव–जगदम्बा का गायन नहीं है, शिव–लक्ष्मी का गायन नहीं है। शिव के साथ और कोई भी 33 करोड़ देवताओं में से कोई का भी नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा जाता क्योंकि एक ही पार्टधारी है जिसमें शिव मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है और वो शंकर फिर बैल पर सवार दिखाया जाता है। बैल जानवरियत की निशानी है। मनुष्य मनन–चिंतन–मंथन करने वाले की निशानी है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Three kinds of souls play a part through the same body. One is the incorporeal Shiv, the second is the soul of subtle Brahma (Dada Lekhraj) and the third is that corporeal human body in which Shiv has to enter and transform (him) from a man to Narayan. That is why there is the praise of Shiva and Shankar being combined into one. 'Shiv-Ram' is not famous, 'Shiv-Krishna' is not famous, 'Shiv-Brahma' is not famous, 'Shiv-Vishnu' is not famous, 'Shiv-Jagdamba' is not famous, and 'Shiv-Lakshmi' is not famous. The name of none of the 33 crore deities is suffixed to Shiv because there is only one actor, in whom Shiv enters in an appointed form and that Shankar is shown to ride on a bull. Bull is an indication of animal's instinct (*jaanvariyat*). Human being is an indication of the one, who thinks and churns.

जो मनन–चिंतन–मंथन कर सकता है, सोच–विचार कर सकता है, उसी को मनुष्य कहा जाता है। भगवान आ करके जानवरों को सुधारेगा, जानवरों को पढ़ाएगा या मनुष्यों को पढ़ाएगा? मनुष्यों को ही आकर पढ़ाता है। मनुष्य ही सुधर सकते हैं। मनुष्य ही मनन–चिंतन–मंथन कर सकते हैं, पश्चाताप कर सकते हैं। गधे को दस डंडे मार दो, वो पश्चाताप नहीं करता है। मनुष्य पश्चाताप करता है। इसलिए मननात मनुष्य कहा जाता है। इसलिए बोला कि मैं मनुष्य तन में आता हूँ। जानवर में नहीं आता हूँ। आता हूँ का मतलब प्रत्यक्ष होना। भगवान बाप आते हैं, मनुष्य तन में प्रत्यक्ष होते हैं। ब्रह्मा के तन को मनुष्य तन कहें? शिव के मंदिर में जो बैल निशानी दिखाई गई है वो किसकी यादगार है? ब्रह्मा के तन में प्रवेश तो किया लेकिन संसार में प्रत्यक्ष नहीं हुआ कि भगवान बाप आया। तो जब तक प्रत्यक्ष नहीं हुआ तो सारा संसार गॉड फादर नहीं मान सकता। जब सारा संसार उसे गॉड फादर माने, जो इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरु नानक आदि की आत्माएँ इस संसार में अपना पार्ट बजा रही हैं, वो भी उसको अपना बाप मानें; तब कहेंगे गॉड फादर इस संसार में आया।

Only the one who can think and churn, who can reflect upon a thought is called a human being (*manushya*). Will God come and reform animals, teach animals or will He teach the human beings? He comes and teaches only the human beings. Only the human beings can reform. Only the human beings can think and churn and repent. You may beat a donkey with a stick ten times, but it does not repent. A human being repents. That is why the one who thinks through the mind (*mananaat*) is called a human being (*manushya*). That is why it was said that I come in a human body. I do not come in an animal. 'I come' means 'to be revealed'. When God Father comes He is revealed through a human body. Should Brahma's body be called a human body (*manushya tan*)? Whose memorial is the symbol of bull that has been shown in the temple of Shiv? He did enter in the body of Brahma but he was not revealed in the world (so that everyone could say that) 'God has come'. So, until He is revealed, the entire world cannot accept Him as God the Father. When the entire world accepts him as God the Father; when the souls of Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak, etc. who are playing their parts in this world, accept Him as their father, then it will be said that the God the Father has come in this world.

और गॉड फादर को तो सारी दुनियाँ मानती है। सब याद करते हैं। ज़रूर गॉड फादर से प्रैक्टीकल में कोई प्राप्ति हुई है; परंतु वो मनुष्य तन में आ करके प्रत्यक्ष होता है। ब्रह्मा के तन में आया; परंतु भक्तिमार्ग में गायन बैल के रूप में चलता है। क्यों? क्योंकि ब्रह्मा के तन में आने के बावजूद भी ब्रह्मा के मुख से जो वाणी निकली उस वाणी के गुह्यार्थ को न ब्रह्मा ने समझा और न ब्राह्मणों ने समझा। ब्रह्मा के मुकाबले तो मम्मा ज्यादा मनन–चिंतन–मंथन करती थी। एक–एक प्वाइन्ट की गहराई में, कितने विस्तार में जाती थी। तो ब्रह्मा का तन तो सिर्फ वाणी चलाने के निमित्त बना। उसे कहेंगे सुनना और सुनाना। मनन–चिंतन–मंथन नहीं हुआ। मनन–चिंतन–मंथन न होने के कारण ये क्लीयर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

किया गया मुरली में कि अभी गीता ज्ञान अमृत नहीं कहेंगे। अमृत मंथन करने से निकलता है।

And the entire world believes God the Father. Everyone remembers (Him). Definitely they have achieved something from God the Father in practical, but He is revealed by coming in a human body. He came in the body of Brahma, but in the path of worship there is glory in the form of a bull. Why? It is because in spite of coming in the body of Brahma, whatever versions emerged from the mouth of Brahma was neither understood by Brahma nor did the Brahmins understand it. When compared to Brahma, Mamma used to think and churn more. She used to go into the depth and expanse of each point. So, the body of Brahma became instrumental only for narration of the versions. That will be called listening and narrating. It was not thinking and churning. Because there was no thinking and churning it was clarified in the Murlis (narrated through Brahma) that it will not be called the nectar of knowledge of the Gita now (i.e. before 1969). Nectar emerges through churning.

जैसे दूध को जब तक बिलोया न जाए, दही को जब तक मथा न जाए, तब तक मक्खन नहीं निकलता, सार नहीं निकलता, ऐसे ही ज्ञान सागर बाप की वाणी का जब तक मंथन न किया जाए, तब तक ज्ञानामृत तैयार नहीं हो सकता। इसलिए ब्रह्मा के मुख से जो भी वाणी निकली उसको ज्ञानामृत नहीं कहेंगे। गीता ज्ञानामृत तब कहा जाता है, जब ज्ञान सागर बाप उस वाणी के एक–एक हिज्जे को विस्तार में करके समझाता है, टीचर बन करके आता है , बाप के रूप में बच्चों को सुख और शान्ति का अखन्ड वर्सा देकर जाता है।

For example until milk is churned, until curd is churned, the cream does not emerge, the essence does not emerge; similarly, until the versions of the ocean of knowledge Father are churned, the nectar of knowledge cannot be prepared. That is why whatever versions emerged from the mouth of Brahma will not be called the nectar of knowledge. It is called the nectar of knowledge of the Gita only when the ocean of knowledge, i.e. the Father explains every word of those versions in detail, when He comes in the form of a teacher, when He gives the indestructible inheritance of happiness and peace to the children in the form of a Father and departs.

समय – 12.31
जिज्ञासु – बाबा, शिवलिंग को क्यों नीचे रखे हैं?
बाबा – नीचे रखा! नीचे क्यों रखा? और पहाड़ों पे ऊँचाई पर मन्दिर बनाते हैं। नीचे थोड़े ही रखते हैं।
जिज्ञासु – मन्दिर में तो शंकर की मूर्ति ऊपर थी और शिव का लिंग नीचे।
दूसरा जिज्ञासु – गड्ढे में रखते हैं – ये बात कर रहे हैं।

Time: 12.31
Student: Baba, why is Shivling placed below?
Baba: Is it placed below? Why is it placed below? And temples are built at a height, on the mountains. Is it placed below?
Student: In the temple the idol of Shankar was above and Shiv's *ling* was placed below.
Second student: He is telling that it is placed in a pit.

बाबा – अच्छा! स्त्री की योनि को गड्ढा कहा जाता है। अर्थात् शिव का सिर्फ लिंग ही पूजा जाता है और देवताओं की दूसरी–दूसरी कर्मेन्द्रियाँ भी पूजी जाती हैं। देवताओं के नेत्रों को कहते हैं – कमल नेत्र, मुख को कहते हैं – मुख कमल, हाथों को कहते हैं – हस्त कमल, पाँव को कहते हैं – कमल पाद, कमल से उपमा देते हैं । लेकिन भगवान

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

शिव का सिर्फ लिंग ही दिखाया जाता है क्योंकि जो भी विकार हैं और विकारों को भोगने वाली जो भी इन्द्रियाँ हैं, उन विकारों में सबसे पावरफुल विकार कौन–सा है? काम विकार। और काम विकार से कनेक्टेड जो इन्द्रिय है, वो भी बहुत मुश्किल से जीती जाने योग्य है और उसको जीतने का काम इस संसार में सबसे पहले शंकर ने किया। इसलिए शंकर को अमोघवीर्य कहा जाता है। लेकिन जंगल में जा करके नहीं जीता। घर–गृहस्थ में रह करके जीता है। इसलिए बोला कि तुम सब पार्वतियाँ हो और शिव–शंकर भोलेनाथ एक ही है।

Baba: OK! The female organ of generation (*yoni*) is called a pit. It means that only the *ling* of Shiv is worshipped and other bodily organs of the other deities are also worshipped. The eyes of the deities are called – lotus-like eyes; their face is called lotus-like face; their hands are called – lotus-like hands; their legs are called – lotus-like legs. A comparison is made with the lotus. But in case of God Shiv, only His *ling* is shown because among all the vices and among all the organs which experience the vices, which is the most powerful vice? The vice of lust. And the organ connected with the vice of lust is very hard to conquer and it was Shankar who first of all gained victory over it in the world. That is why Shankar is called *Amoghveerya* (the one who never gets discharged) He did not gain victory (over it) in a forest. He gained victory while living in a household. That is why it was said that you all are Parvatis and Shiv-Shankar Bholeynath is only one.

वो एक ही पार्ट संसार में ऐसा है जो सदैव प्रवृत्ति में रहता है। मंदिर में भी उसकी प्रवृत्ति दिखाई जाती है। भक्त लोग उसको माता–पिता के रूप में मानते हैं। माता के रूप में वो गड्ढा दिखाया गया है और पिता के रूप में वो लिंग दिखाया गया है क्योंकि स्त्री और पुरुष की पहचान सिवाय उन दो इन्द्रियों के और हो नहीं सकती। स्त्री चोले में भी वो इन्द्रियाँ होती हैं, पुरुष चोले में भी वो इन्द्रियाँ होती हैं। सिर्फ एक ही इन्द्रिय का फर्क होता है। उस फर्क के आधार पर चित्रकारों ने वो चित्र बनाया है, जिसमें ये दिखाया है कि प्रवृत्तिमार्ग में रह करके सौ परसेन्ट निवृत्ति की यादगार सिर्फ एक शिव–शंकर की है। और कोई की नहीं है। और देवताएँ सौ परसेन्ट उस एवर प्योरिटी की स्टेज को नहीं प्राप्त कर सकते। एक शिव बाप ही है जो प्रैक्टीकल जीवन में इस संसार में गड्ढे की दुनियाँ में आ करके, पतित तन, पतित दुनियाँ और पतितों के संग में आ करके, फिर भी बुद्धि से पवित्र, पावन स्टेज में रहता है। ऊँची स्टेज में रहता है। इसलिए शंकर को सदैव कैलाश पर्वत पर दिखाते हैं। ये ऊँची स्टेज की निशानी है। मंदिर भी ऊँचे स्थान पर बनाते हैं।

That is the only part (role) in the world, which always remains in a household. His household is shown even in the temple. Devotees consider Him to be their Mother and Father. The Mother has been shown in the form of a pit and the Father has been shown in the form of *ling* because a woman and a man cannot be recognized except for these two organs. The same organs are present in a woman as well as a man. There is a difference of only one organ. On the basis of that difference, the artists have prepared that picture, in which it has been shown that the memorial of hundred percent renunciation while living in a path of household is only that of one Shiv-Shankar and nobody else. Other deities cannot achieve the stage of hundred percent ever purity. It is the Father Shiv alone who remains in a pure stage through the intellect it the real life despite coming in the world of pit, despite coming in an impure body, impure world and despite living in the company of the impure ones. He lives in a high stage. That is why Shankar is always shown on the Mt.Kailash. This is an indication of high stage. Temples are also constructed at a height.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 17.02
जिज्ञासु – ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा के बीच में अंतर क्या है?
बाबा – ब्रह्मा अनेकों के नाम हैं और प्रजापिता ब्रह्मा सिर्फ एक का नाम है। ब्रह्मा के चार–पाँच मुख दिखाए जाते हैं। इससे साबित होता है ब्रह्मा अनेक हैं और साकार में प्रजापिता ब्रह्मा सिर्फ एक ही होता है और जब तक इस सृष्टि पर प्रजा है, तब तक प्रजापिता इस सृष्टि पर मौजूद रहता है। प्रजापिता सारी मनुष्य सृष्टि का पिता है। इसलिए सारी मनुष्य सृष्टि का बीज है। बीज सूक्ष्म, अति सूक्ष्म होता है। और मनुष्य आत्माएँ इतनी सूक्ष्म स्टेज नहीं धारण कर सकतीं जितनी प्रजापिता सूक्ष्म स्टेज धारण करता है। ये सूक्ष्म स्टेज धारण करने के कारण ही सूक्ष्म अति सूक्ष्म शिव बाप उसमें प्रवेश करता है। जितनी सूक्ष्म बुद्धि वाली आत्मा होगी, उतनी जास्ती ज्ञान के विस्तार में जावेगी। जितनी स्थूल बुद्धि होगी, उतने ज्ञान के विस्तार में जाने में सक्षम नहीं होगी।
Time: 17.02
Student: What is the difference between Brahma and Prajapita Brahma?
Baba: Many people have the name Brahma and only one person has the name Prajapita Brahma. Brahma is shown to have four-five faces. It proves that Brahmas are many and Prajapita Brahma in corporeal form is only one. And until there are subjects in this world, Prajapita is present in this world. Prajapita is the father of the entire human world. That is why he is the seed of the entire human world. Seed is subtle, very subtle. Other human souls are unable to achieve such a subtle stage that Prajapita achieves. Only because of achieving this subtle stage, the subtlest Father Shiv enters in him. The more subtle intellect a soul possesses, the more it will be able to go into the expanse of knowledge. The more gross the intellect, the less capable it will be in going into the expanse of the knowledge.

तो ब्रह्मा में और प्रजापिता ब्रह्मा में तो वास्ट अंतर है। ब्रह्मा का अर्थ ही है ब्रह्म माने बड़ी, माँ माने माँ। माने बड़ी माँ। माँ सदैव साकार होती है। साकार बुद्धि वाली। देह का ओना माताओं को बहुत रहता है। भक्तिमार्ग में भी देखा जाता है कि नागे लोग बड़े आराम से नंगे रह लेते हैं लेकिन स्त्रियाँ नंगी नहीं रह सकतीं क्योंकि देह का भान होता है। माता का रूप देहभान वाला रूप है और बाप बीज होता है, सूक्ष्म होता है। इसलिए बोला है – "अहं बीज प्रदःपिता"। मैं बीज बोने वाला पिता हूँ। धरणी तो विस्तार वाली होती है। विस्तार वाली धरणी में ही सूक्ष्म बीज का आरोपण होता है। तो ब्रह्मा में और जगतपिता में वास्ट डिफरेन्स है।
So, there is a vast difference between Brahma and Prajapita Brahma. Brahma itself means – *Brahm*, i.e. big, *maa* means mother. It means senior mother. A mother is always corporeal, the one who possesses a corporeal intellect. Mothers are very conscious about their body. Even in the path of worship it is seen that the Naga people are able to live naked very comfortably, but women cannot live naked because they are conscious of their body. A mother's form is of body consciousness and the Father is seed, subtle. That is why it was said – '*Aham beej Pradahpita'*. I am the Father who sows the seed. The earth has a lot of expanse. It is in the expanded earth that the subtle seed is laid. So, there is a vast difference between Brahma and Jagatpita.

समय – 20.10
जिज्ञासु – ब्रह्मा को वस्त्रधारी दिखाया और शंकर को निर्वस्त्रधारी क्यों दिखाते हैं?
बाबा – देह रूपी वस्त्र को वस्त्र कहा जाता है। जैसे आत्मा सिर्फ बिन्दु है तो नंगी है और बिन्दु आत्मा शरीररूपी वस्त्र को धारण करती है तो वस्त्र वाली कही जाती है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

इसलिए ब्रह्मा का जैसा नाम है – ब्रह्म माने बड़ी, माँ माने माँ। माना जगत् की बड़ी माँ। जैसे मुरली में बोला है – वास्तव में ये ब्रह्मा तुम्हारी जगदम्बा है; परंतु तन पुरुष का है। इसलिए पुरुष तन होने के कारण कन्याओं–माताओं के चार्ज में इनको नहीं रखा जा सकता। इसलिए ओमराधे मम्मा को निमित्त बनाया गया।

Time: 20.10

Student: Brahma has been shown to be wearing a dress and why is Shankar shown to be naked?

Baba: The cloth-like body is called a cloth. For example when a soul is just a point, it is naked and when the point-like soul takes up the cloth-like body it is called a clothed soul. That is why, just as the name of Brahma; '*Brahm*' means big/senior and *maa* means mother. It means the senior mother of the world. For example it has been said in the Murli – Actually this Brahma is your Jagdamba, but the body is male. That is why because of being a male body he cannot be kept in the charge of virgins and mothers. That is why Om Radhey Mamma was made instrumental.

तो ब्रह्मा नाम से ही साबित होता है कि बड़ी माँ का पार्ट था; परंतु जो बड़ी माँ का पार्ट था, वो गुणों के आधार पर था। जो सहनशक्ति माता के अंदर होनी चाहिए, वो सहनशक्ति ब्रह्मा के अंदर थी। कोई भी ब्रह्माकुमार–कुमारी जिसने प्रैक्टीकल जीवन में ब्रह्मा का साथ लिया, वो आज तक ये कहता हुआ नहीं सुना गया कि ब्रह्मा बाबा ने हमको कभी दुःख दिया। सदैव हर बच्चे के मुख से यही निकलता रहा कि बाबा ने हमको जितना सुख दिया, उतना दुनियाँ में और किसी ने सुख नहीं दिया। भल दस सेकेन्ड के लिए कोई संसर्ग में आया है, तो भी उसने ये अनुभव किया कि ब्रह्मा बाबा ने हमको बहुत सुख दिया। और जो दूसरों को सुख देता है वो ज़रूर सहनशक्ति वाला होता है। माँ बच्चों को जितना सुख देती है, उतना और कोई संबंध सुखदाई नहीं हो सकता। खुद दुःख सहन करती है और बच्चे को सुख देती है, लेकिन वो तो सारी जगत् की माँ का पार्ट था। उससे ज्यादा सहनशक्ति और दुनियाँ में किसी पार्टधारी में हो ही नहीं सकती। इसलिए ब्रह्मा का पार्ट तो सहनशक्ति के आधार पर बहुत अद्भुत पार्ट था।

So, the name 'Brahma' itself proves that it was the part of the senior mother, but the part of the senior mother was on the basis of virtues. Brahma had the power of tolerance that a mother should have. NoBrahmakumar-Kumari, who remained in the company of Brahma in his/her practical life, has been heard telling till date that Brahma Baba ever caused sorrow to them. It always emerged from the mouth of every child that nobody caused as much happiness to them in the world as Baba did. Although someone may have come in contact for ten seconds, he experienced that Brahma Baba gave him a lot of happiness. And the one who gives happiness to others will certainly have the power of tolerance. No relationship gives as much joy as a mother gives to her children. She tolerates pains herself and gives happiness to the children, but that was the part of the mother of the entire world. No actor can have more power of tolerance in the world than him. That is why Brahma's part was a very wonderful part on the basis of the power of tolerance.

समय – 23.01

जिज्ञासु – बाबा, मुझे हिंदी नहीं आती है। मुझे जीवनमुक्ति दीजिए, साथ में ले जाइए। बंधनमुक्त कर दीजीए। मेरे युगल तो ज्ञान को नहीं मान रहे हैं। क्या करूँ बताइए?

बाबा – बाबा आके सबको बंधंनमुक्त कर दें या बाबा सिर्फ रास्ता बताएँ और प्रैक्टिस करो और बंधंन मुक्त हो जाओ। बाबा ने तो प्रैक्टिस बता दी अपन को ज्योति बिन्दु आत्मा समझो, स्टार आत्मा समझो। अब स्टार आत्मा तो समझना थोड़ा प्रैक्टिस करनी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

होती है। बिन्दी लगाना सहज होता है। सो बड़ी आराम से लगा लेते हैं। तो बिन्दी लगाने की बात नहीं है। अपनी आत्मा को देह से अलग स्टार समझो, तो बंधन से मुक्त हो जाएँगे।

Time: 23.01

Student: Baba, I don't know Hindi. Please grant me *jeevanmukti* (liberation from vices and sorrows while being alive); take me along with you. Make me free from bondages (*bandhanmukta*). My husband is not accepting the knowledge. Tell me, what should I do?

Baba: Should Baba come and make everyone free from bondages or should Baba just show the path and we should practice and become free from bondages? Baba told us to practice, consider yourself to be a soul, a star-like soul. Well, it requires some practice to consider oneself to be a star-like soul. It is easy to apply a point. You apply that very comfortably. So, it is not a matter of applying a point. Consider your soul to be a star different from the body; then you will become free from bondages.

समय – 24.08

जिज्ञासु– बाबा, ये नौ ग्रह अपन को भगवान कहकर बैठ जाते हैं, बाबा ने बोला कि वो नौ ग्रह कोई त्रिमूर्ति भी होंगे। नौ का अपना–अपना त्रिमूर्ति बनाते हैं। मतलब 9 तिया 27 नक्षत्र का जो गायन होता है, उसमें नौ सूक्ष्म बीज, नौ स्थूल बीज और नौ आधारमूर्त बीज। तो जो बीज नौ हैं, उसमें सूर्यवंशी और चंद्रवंशी से कनेक्टेड क्या एक–एक करके लागू होता है क्या?

Time: 24.08

Student: Baba, these nine (living) planets consider themselves as Gods; Baba said that those nine planets will also be Trimurties. Trimurty of each of the nine are prepared. It means that 9X3=27 stars, which are praised, among them 9 are subtle seeds (*sookshma beej*), nine are physical seeds (*sthool beej*) and nine are base-like seeds (*aadhaarmoorth beej*). So, the nine seeds, and among them those connected with the *Suryavanshis* and the *Chandravanshis*; does it apply one after the other?

बाबा – नौ ग्रहों में से ग्रह होते हैं, उपग्रह होते हैं, नक्षत्र होते हैं। तो नौ ग्रहों में नक्षत्र तो एक ही है। बाकी तो सब ग्रह की स्टेज वाले हैं। सब जानते हैं कि नक्षत्र स्वयं दैदीप्यमान, प्रकाशमान होता है और जो ग्रह होते हैं वो स्वयं प्रकाशमान नहीं होते हैं। बाकी अंहकार में आ जाएँ कि हम ही भगवान हैं, हम ही सूर्य हैं, हम ही रोशनी देने वाले हैं, ये बात तो एक अलग बात है ना। ऐसे ये नव ग्रह हैं जो अंहकार में आ करके अपने को भगवान समझने लग पड़ते हैं लेकिन वास्तव में जब विनाश होता है तो सबकी पोलपट्टी खुल जाती है।

Baba: Among the nine planets there are planets (*grah*), satellites (*upgrah*), stars (*nakshatra*). So, there is only one star among the nine planets. All the remaining ones are in the stage of planets. Everyone knows that stars are self-radiant (*daideepyamaan*) self-luminous (*prakaashmaan*), and the planets are not self-luminous. As for the rest, they may become egotistic that we ourselves are Gods, we ourselves are Suns, we ourselves are the ones who give light; this is a separate thing, isn't it? Similarly, these nine planets become egotistic and start considering themselves Gods but actually when the destruction takes place, everybody's secrets are revealed.

नऊ ग्रह आपस में टकराते हैं और टकराने के बाद एक ही बचता है – सूर्य और बृहस्तपति, जो वृक्षपति की दशा है इसलिए सबसे श्रेष्ठ दशा मानी जाती है क्योंकि वो सच्चाई के आधार पर टिकता है। वो अपन को भगवान नहीं मानता, वो अपन को शिव

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

नहीं कहता। शिव अलग है और पार्ट बजाने वाली आत्माएँ अलग हैं। शिव तो ऐसे है जैसे ज्ञान सूर्य और आत्माओं में परमपार्ट बजाने वाली आत्मा है बृहस्तपति जिसे वृक्षपति कहा जाता है। ये सारी मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का पति है, पिता है, बीज है परंतु स्वयं प्रकाशित नहीं है। स्वयं प्रकाशित सिर्फ एक परमपिता परमात्मा शिव ही है। और कोई स्वयं प्रकाशित नहीं है।

The nine planets clash with each other and after they clash, only one survives the Sun. And (concerning) Jupiter (*Brihastapati*), the influence of Jupiter (*vrikshapati*) is considered to be the highest influence because he remains stable on the basis of truth. He does not consider himself to be God; he does not call himself Shiv. Shiv is different and the souls that play their parts are different. Shiv is like the Sun of knowledge and the soul that plays the supreme part among all the souls is Jupiter, who is called *Vrikshapati*. He is the protector (*pati*), the Father and the seed of the entire human world tree, but he is not self-luminous. It is the Supreme Father Supreme Soul Shiv alone, who is self-luminous. Nobody else is self-luminous.

समय – 26.50
जिज्ञासु – बाबा, जगदम्बा बच्ची में ब्रह्मा बच्चा प्रवेश कर लेता है तो दोनों बच्चा और बच्ची हो जाते हैं। तो वो जो प्लानिंग करेंगे, तो रिजल्ट बच्चा बुद्धि का ही होता है। तो जगदम्बा माँ को कुछ प्लानिंग वगैरह न करके सिर्फ शिवबाबा के डाइरैक्शन पर चलना चाहिए क्या?

Time: 26.50
Student: Baba, child Brahma enters daughter Jagdamba; so both happen to be children. So, whatever planning they make, its result is only like that of a child-like intellect. So, should mother Jagdamba not involve herself in any kind of planning and just follow the directions of Shivbaba?

बाबा – अब चाहिए–चाहिए तो सब कुछ लेकिन एक होता है डब्बा और एक होती है उसमें प्रवेश करने वाली आत्मा। ज्यादा पावरफुल कौन है? प्रवेश करने वाली आत्मा ज्यादा पावरफुल होती है। तो जगदम्बा तो है जैसे कि एक डब्बा और डब्बे में प्रवेश करने वाली आत्मा है ब्रह्मा (दादा लेखराज) जो कृष्ण के रूप में सतयुग में जन्म लेगी। तो जो आत्मा है उसकी महिमा ज्यादा है। क्यों? क्योंकि सहनशीलता का पार्ट जगदम्बा ने नहीं बजाके दिखाया। नाम तो धारण हुआ शरीर के आधार पर क्योंकि शरीर का ही नाम जगदम्बा पड़ता है। आत्मा का नाम नहीं पड़ता है लेकिन वास्तव में काम आत्मा ने किया या डब्बे ने किया? माता का पार्ट किसने बजाया? सहनशक्ति का पार्ट किसने बजाया? ब्रह्मा ने बजाया।

Baba: Well, everything is a 'should be like this', but one is a box and one is the soul that enters it. Who is more powerful? The soul that enters is more powerful. So, Jagdamba is like a box and the soul that enters the box is Brahma (Dada Lekhraj) who will take birth as Krishna in the Golden Age. So, the soul has more glory. Why? It is because the part of tolerance was not played by Jagdamba. The name was based on the body because the body gets the name Jagdamba. A soul does not get a name, but was the task actually performed by the soul or by the box? Who played the part of the mother? Who played the part of tolerance? Brahma played the part.

समय – 28.24
जिज्ञासु – बाबा, नऊ ग्रहों का टकराव होगा माना विनाश को पाएँगे ना?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा – जो पावरफुल होगा सो बचेगा, या जिसके ऊपर ऊँच ते ऊँच शिव बाप की छत्रछाया होगी, वो बचेगा। और जितने भी होते हैं वो "थोथा चना बाजे घना"। जो आधी भरी हुई जल की गगरी होती है, वो बहुत छलकती है और भरी हुई गगरी होती है तो कम छलकती है। ऐसे ही जो बृहस्तपति है वो अपने को भगवान कभी नहीं कहता। और जो ग्रह हैं, जिनमें भगवान मुकर्रर रूप से प्रवेश करता ही नहीं, वो अपन को भगवान कहके बैठते हैं। तो सच्चाई एक न एक दिन सर के ऊपर चढ़कर के बोलेगी या नहीं बोलेगी? बोलती है। सच्चाई प्रत्यक्ष हो जाती है। इसलिए जब नऊ ग्रहों में टकराव होता है तो सिर्फ बृहस्पति ही बचता है और बाकी सब ग्रह नष्ट, भ्रष्ट हो जाते हैं।

Time: 28.24

Student: Baba, all the nine (living) planets will clash; it means that they will be destroyed, won't they?

Baba: Either the one who is powerful will survive or the one, who is under the canopy of protection of the highest on high Father Shiv, will survive? All others are like '*thotha chana baajey ghanaa'* (empty vessels make much noise). A half-filled pot splashes a lot and if the pot is full, it splashes less (i.e. deep rivers move with silent majesty, while shallow brooks are noisy). Similarly, Jupiter (*brihaspati*) never calls himself God. All other planets, whom God does not enter in an appointed form at all, consider themselves as Gods. So, ultimately will the truth speak fearlessly or not? It speaks. The truth is revealed. That is why, when all nine (living) planets clash, only Jupiter survives and all other planets are destroyed.

समय – 30.23

जिज्ञासु – बाबा, जो पाँच तत्व होते हैं – जल, वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी। तो यहाँ चैतन्य आत्माएँ होंगी ना। तो उनकी गुण और विशेषता क्या?

बाबा – उनके गुण, पृथ्वी का गुण नहीं मालूम है? हवा का गुण नहीं मालूम है? अग्नि का गुण नहीं मालूम है? अरे! ये तो सब जानते हैं अग्नि जलाय देती है। नहीं मालूम है?

जिज्ञासु – मालूम है।

बाबा – फिर?

Time: 30.23

Student: Baba, there are five elements, water, wind, fire, sky and Earth. So, there will be living souls here (which represent these elements), won't they? So, what will be their virtues and specialties?

Baba: Don't you know their virtues, the virtue of Earth? Don't you know the virtue of wind? Don't you know the virtue of fire? Arey! Everyone knows that fire burns (anything). Don't you know (this)?

Student: I know.

Baba: Then?

जिज्ञासु – यहाँ सूक्ष्म में कैसे शूटिंग होती है?

बाबा – यहाँ भी है। सूक्ष्म में जलाना किसको कहा जाता है? रावण को राम ने जलाया तो क्या तीली डालके जलाया? कि उसको ज्ञान बाण मार करके उसके जी को जलाया? दिल जलता है। ऐसे थोड़े ही कोई स्थूल रावण है, तो उसका पुतला जलता है।

Student: How does the shooting take place here in a subtle form?

Baba: They exist even here. What does 'burning' in subtle form mean? Ram burnt Ravan; so did he burn him by striking a matchstick? Or did he burn his heart by shooting the arrows of knowledge? The heart burns. It is not as if there is a physical Ravan, whose effigy is burnt.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 32.12
जिज्ञासु – बाबा, जो नव ग्रह हैं, अंत में टकराते–टकराते सिर्फ एक बृहस्पति ग्रह बचता है। तो उसी तरह से क्या स्थूल में जो ग्रह हैं, सिर्फ बृहस्पति ही एक बचेगा और सब नष्ट, भ्रष्ट हो जाएँगे? इसका मतलब जो पृथ्वी है वो भी नष्ट, भ्रष्ट हो जाएगी क्या?

Time: 32.12
Student: Baba, (it has been told that) the nine (living) planets will keep clashing and only one planet Jupiter survives at the end. So, similarly, among all the planets that physically exist, will only one Jupiter survive and will the remaining (planets) be destroyed? Does it mean that the Earth will also be destroyed?

बाबा – पृथ्वी नष्ट, भ्रष्ट नहीं हो जाती है। कोई भी ग्रह नष्ट, भ्रष्ट नहीं हो जाता है लेकिन अपने अस्तित्व को दूसरों के अस्तित्व में तिरोहित कर देता है। मर्ज हो जाता है। जैसे कि सात नारायण सतयुग में होंगे या नहीं होंगे? होंगे। और वो ही सात नारायण द्वापर युग में जा करके उनमें धर्म पिताएँ प्रवेश करेंगे और अपने–अपने धर्म की स्थापना करेंगे। तो वो धर्मपिताएँ जो साकार रूप में द्वापरयुग में थे, कलियुग में थे, वो सतयुग में होते हैं या नहीं होते हैं? होते हैं लेकिन अपने स्वरूप को मर्ज कर देते हैं। ऐसे ही वो अपने स्वरूप को मर्ज कर देंगे। अपने अस्तित्व को मर्ज कर देंगे। माने अपनी कोई बात उनकी चलेगी नहीं। अपनी खुदी को खत्म कर देंगे।
Baba: The Earth is not destroyed. No planets are destroyed, but one planet merges its existence in the existence of the other planets. It merges. For example, will the seven Narayans exist in the Golden Age or not? They will. And the religious Fathers will enter the (bodies of the souls of the) same seven Narayans in the Copper Age and establish their respective religions. So, do those religious fathers (i.e. the seven Narayans) who were present in a corporeal form in the Copper Age, in the Iron Age, exist in the Golden Age or not? They are present, but they merge their form. Similarly, they (i.e. the living planets) will merge their form. They will merge their existence. It means that they will not be able to have their say. They will finish their pride (*khudee*).

समय – 33.30
जिज्ञासु – प्रजापिता ब्रह्मा जगन्नाथ है और बलभद्र, सुभद्रा कौन? किसका यादगार है?
बाबा – बलभद्र राम को कहते हैं। बलराम को ही बलभद्र कहा जाता है। अभी तक ये मालूम नहीं? ये राम और कृष्ण की जोड़ी है जो रामायण में भी राम और लक्ष्मण के रूप में दिखाई गई है और महाभारत में भी बलराम और कृष्ण के रूप में दिखाई गई है।
Time: 33.30
Student: Prajapita Brahma is Jagannath, and who are Balbhadra, Subhadra? Whose memorial is it?
Baba: Ram is called Balbhadra. Balram himself is called Balbhadra. Didn't you know this until now? This is a pair of Ram and Krishna, who have been depicted as Ram and Lakshman in the Ramayana as well and they have been shown in the form of Balram and Krishna in the Mahabharata as well.

समय – 34.21
जिज्ञासु – भक्तिमार्ग में "हरे कृष्ण हरे राम" बोलने से दुःख किसका दूर हुआ?
बाबा – दुख किसका दूर हुआ? किसी का दूर नहीं हुआ। मुख से बोलने से कहीं दुख दूर हो सकते हैं? बोलने से नहीं दुःख दूर होते हैं। राम और कृष्ण ने क्या एक्ट किया

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और वो एक्ट जो करने वाला और कराने वाला करन–करावनहार कौन कार्य करा रहा है, उसको जान करके, उसको मान करके, उसको याद करने से दुःख दूर होते हैं। "हरे राम हरे कृष्ण" तो कितने सालों से, वर्षों से, सैकड़ों साल से बोलते चले आए। किसी के दुःख दूर हुए क्या? हो ही नहीं सकते। बोल–बोल करने से थोड़े ही दुःख दूर हो जाते हैं। राम और कृष्ण में वो एक्ट किसने कराई? एक्ट कराने वाला, करने वाला कौन था, उसको पहचानने से और पहचानकर उसे याद करने से दुःख दूर होते हैं।

Time: 34.21

Student: Whose sorrows were removed by /chanting '*Hare Krishna Hare Ram'* in the path of worship?

Baba: Whose sorrows were removed? Nobody's sorrows were removed. Can anybody's sorrows be removed just by uttering through the mouth? Sorrows are not removed just by uttering. The sorrows are removed by remembering the acts performed by Ram and Krishna, and by knowing, accepting and remembering the one who is doing and enabling the tasks through them, the doer and enabler (karn karavan har) People have been chanting 'Hare Ram Hare Krishna' for so many years, hundreds of years. Were anybody's sorrows removed? They cannot be removed at all. The sorrows are not removed just by chanting. Who enabled Ram and Krishna to perform those acts? The sorrows are removed by recognizing and remembering the one who enabled them to perform the actions, the one who performed the actions.

समय – 35.45

जिज्ञासु – बाबा, बाबा ने तो बोला – नई दुनियाँ में मुझे कोई बुलाते भी नहीं, पूछते भी नहीं। तो बाबा ने उसका राज़ बताया कि जो आदि में स्वर्गीय नया संगठन बनना था, तब कोई राम वाली आत्मा को याद किए थे क्या? नहीं किए थे। तो बाबा अभी अंत में जो संगठन एन.एस. बनता है, उसमें तो स्वयं राम वाली आत्मा ही सब बना रही है।

Time: 35.45

Student: Baba, Baba said, 'Nobody calls me in the new world, they do not care about me either'. So, Baba revealed the secret about it that when the new heavenly gathering was to be set-up in the beginning, did anyone remember the soul of Ram at that time? They did not. So, Baba, now the gathering, i.e. NS, which is prepared in the end, the soul of Ram is itself preparing everything in it.

बाबा – ये नया संगठन जो अभी कहा जा रहा है – "तुम ब्राह्मण बच्चों को नई दुनियाँ की सौगात दी है"। ये नई दुनियाँ का फाउन्डेशन है, नई दुनियाँ नहीं है। कोई मकान बनता है तो उसका पहले फाउन्डेशन डाला जाता है। जो फाउन्डेशन है वो कोई नई दुनियाँ नहीं हो गई लेकिन नई दुनियाँ का फाउन्डेशन। फाउन्डेशन हमेशा जमीन में गहराई में खोद करके डाला जाता है। तो फाउन्डेशन अलग बात है। नई दुनियाँ का फाउन्डेशन तो लग गया लेकिन नई दुनियाँ नहीं बन गई। नई दुनियाँ तब कही जावेगी जब विजयमाला की हेड आ जावे।

Baba: The new gathering (*naya sangathan*) which is being talked about now, 'You Brahmin children have been given a gift of new world'. This is the foundation of the new world; it is not new world. If a house is built, then first of all its foundation is laid. That foundation is not a new world in itself, but it is the foundation of the new world. Foundation is always laid by digging deep into the land. So, foundation is a different subject. The foundation of the new world has been laid, but the new world has not been created. It will be called new world when the head of the rosary of victory (*vijaymala*) arrives.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु – तो बाबा जो भी नई दुनियाँ का संगठन, फाउण्डेशन पड़के कमप्लीट बनके खड़ा हो जाएगा, तो वो बनाने वाला तो स्वंय रामवाली आत्मा ही बैकबोन के रूप में होती है ना?
बाबा – बाप बच्चों को संसार में प्रत्यक्ष करते हैं। सन शोज फादर, फादर शोज सन्स। तो ज्यादा पावरफुल दोनों के बीच में कौन है? फादर या सन्स? फादर ज्यादा पावरफुल है। इसलिए वो बच्चों को संसार के सामने प्रत्यक्ष करेगा। खुद प्रत्यक्ष नहीं होगा। "छुपा रुस्तम बाद में खुले"। लास्ट में जा करके बाप की प्रत्यक्षता होगी।
Student: So, Baba, after the foundation is laid, when the gathering of the new world is completely ready, then the maker, i.e. the soul of Ram himself is present in the form of a backbone, isn't he?
Baba: The Father reveals the children in the world. Son shows father, father shows sons. So, who is more powerful between the two? The Father or sons? The Father is more powerful. That is why He will reveal the children in front of the world. He will not reveal Himself. 'The hidden hero reveals in the end'. The Father's revelation will take place in the end.

जिज्ञासु – मुझे बुलाते भी नहीं, पूछते भी नहीं उसका मतलब क्या है?
बाबा – वो यही मतलब है कि जब सारे संसार में राज करेगा खालसा, जब देवियों का राज्य चलेगा, उस समय राम बाप गुप्त हो जावेगा। इसलिए संसार में आज भी जब देवियों की पूजा करते हैं तो जय माता दी, जय माता दी नारा तो लगाते हैं; लेकिन ये किसी को याद नहीं रहता (कि) इन माता जी के पीछे कोई पिता दी भी बैठा हुआ है। तो बाप गुप्त हो करके देखेगा और शक्तियों का शासन ऐसे ही चलेगा जैसे बेसिक में ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद शक्तियों का शासन चला था। वो तो बहुत छोटा रूप था और अभी तो संसार के बीच में बहुत बड़ा, विशाल रूप आने वाला है।
Student: What is meant by (Baba's words that) 'I am not even called, nobody cares for me either'?
Baba: It means that when the pure ones (*khaalsaa*) will rule over the entire world, when there will be a rule of female deities (*devis*), at that time Father Ram will become incognito. That is why even today in the world when the female deities (*devis*) are worshipped, then they do shout the slogans of '*jai mata dee, jai mata dee'* (victory to the mother), but nobody remembers that there is also a Father behind the Mother. So, the Father will observe in an incognito way and the rule of the *shaktis* will continue in the same way as the *shaktis* ruled in the basic (world of BKs) after Brahma Baba left his body. That was a very small form and now a very huge form (of that rule) is going to come in front of the world.

समय – 38.44
जिज्ञासु – बाबा, जो दस सिर का रावण दिखाते हैं ना, बेसिक में बोलते है दस विकारों को दस सिर रावण और एडवांस में – पाँच तत्व का शरीर और पाँच विकारों को दस सिर का रावण बोलते हैं। पाँच तत्वों का शरीर कैसे विकारी होगा?
बाबा – पाँच तत्व माने साकार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश – ये पाँच तत्व जो शरीर के पाँच तत्व माने जाते हैं। शरीर जो है, वैसे देहभान का सूचक है। देहभान अर्थात् माता। दूसरे शब्दों में उसका नाम दे दो मन्दोदरी। मन्दोदरी के कितने रूप हो गए? पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश। ये मन्द उदर वाले हैं। उदर माने पेट। माने इनका बुद्धिरूपी पेट मन्द है। तीव्र बुद्धि वाले नहीं हैं। इनके मुकाबले जो रावण के पाँच सिर हैं, वो ज्यादा तीव्र बुद्धि हैं। जिनको कहते हैं पाँच विकार। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

– ये पाँच विकार पुरुष के अंदर हैं, पुरूष का रूप और जो पाँच तत्व हैं वो स्त्री का रूप। ये दस मिल करके रावण के सिर बनते हैं।

Time: 38.44

Student: Baba, ten heads of Ravan are shown, aren't they? It is said in the basic (knowledge) that the ten vices are the ten heads of Ravan and in the advance (knowledge) it is said that the body made up of five elements and the five vices are called the ten-headed Ravan. How will the body made up of five elements be vicious?

Baba: Five elements mean corporeal Earth, water, wind, fire and sky, these five elements, which are believed to be the five elements of the body. The body is symbolic of body consciousness. Body consciousness means mother. In other words call it Mandodari (wife of Ravan in the epic Ramayana). How many forms of Mandodari are there? Earth, water, wind, fire and sky. They have a dull stomach (*mand udar*). *Udar* means stomach. It means that their stomach-like intellect is weak. They do not have a sharp intellect. When compared to them the five heads of Ravan have a sharper intellect, which are called the five vices. Lust, anger, greed, attachment and ego, these five vices are present in a maleand represent the masculine form (of Ravan) and the five elements are the feminine form (of Maya-Ravan). These ten together constitute the heads of Ravan.

जो पुरुष रूप हैं, वो बाप के रूप हैं। बीजरूप हैं। बीज कहा जाता है पिता को और माता के रूप में मन्दोदरी हो गई। राम ही रावण बनता है और कृष्ण ही कंस बनता है। इस हिसाब से रावण का रूप हो गए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और कृष्ण जो माता के रूप में पार्ट बजाता है, ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाता है, जगदम्बा के रूप में पार्ट बजाता है, वो माता का रूप हो गई – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। ये रावण के दस रूप बनते हैं। ये दस रूप कलियुग के अन्त की यादगार है या सतयुग के आदि की यादगार है? कलियुग अंत की यादगार है। सतयुग आदि में इनका रूप परिर्वतन हो जाता है।

The male forms are the forms of the father. They are the seeds. The father is called seed and Mandodari is in the form of mother. Ram himself becomes Ravan and Krishna himself becomes Kansa. In this way the forms of Ravan are lust, anger, greed, attachment and ego and Krishna, who plays a part in the form of a mother, who plays a part in the form of Brahma, who plays a part in the form of Jagdamba. She is the form of mother, earth, water, wind, fire and sky. These become the ten forms of Ravan. Are these ten forms a memorial of the last period of the Iron Age or a memorial of the beginning of the Golden Age? They are memorials of the end of the Iron Age. In the beginning of the Golden Age their form changes.

समय – 41.45

जिज्ञासु – लक्ष्मी से धन क्यों माँगते हैं?

बाबा – जगदम्बा से सब मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं और लक्ष्मी से सिर्फ धन माँगते हैं। तो ज्यादा अच्छी कौन–सी लगती है ? जगदम्बा ज्यादा अच्छी लगती है या लक्ष्मी ज्यादा अच्छी लगती है? अरे! जगदम्बा सब मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाली है और लक्ष्मी सिर्फ धन देने की पूर्ति करने वाली है। तो कौन–सी अच्छी हुई?

जिज्ञासु – जगदम्बा।

Time: 41.45

Student: Why do people seek wealth from Lakshmi?

Baba: People fulfil all their desires from Jagdamba and they seek only wealth from Lakshmi. So, who seems better? Do they like Jagdamba more or Lakshmi more? Arey! Jagdamba fulfils all the desires and Lakshmi fulfils only the desire for wealth. So, who is better?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Jagdamba.

बाबा – जगदम्बा हमें बहुत अच्छी लगती है क्योंकि सब मनोकामनाओं की पूर्ति करती है लेकिन लक्ष्मी जो देती है, वो कहाँ से लाके देती है? लक्ष्मी विधवा है या सधवा है? सधवा है। तो कहाँ से देती है?
जिज्ञासु– नारायण से लेती है।
बाबा – नारायण से लेती है फिर देती है और नारायण कहाँ से लेता है? शिव बाप से लेता है। तो लक्ष्मी सिर्फ बाप की दी हुई चीज़ देती है और उसका समझना और कहना है – बाकी जो कुछ मेरे पास है वो सब कचड़पट्टी है। वो मैं तुमको नहीं दूँगी। तो जगदम्बा अच्छी या लक्ष्मी अच्छी?
जिज्ञासु – जगदम्बा।
Baba: We like Jagdamba very much because she fulfils all the desires, but whatever Lakshmi gives us, where does she bring it from? Is Lakshmi a widow or a married woman? She is a married woman. So, from where does she give?
Student: She obtains it from Narayan.
Baba: She obtains it from Narayan and then gives it (to others) and where does Narayan obtain it from? He obtains it from Father Shiv. So, Lakshmi gives only something given by the Father and she feels and says, whatever else I have is garbage. I will not give it to you. So, is Jagdamba better or Lakshmi better?
Student: Jagdamba.

बाबा – तुम्हें जगदम्बा अच्छी लगती है। अरे! सब मनोकामनाओं की जो पूर्ति करेगा, उनमें एक ही मनोकामना श्रेष्ठ है – ज्ञान की प्रालब्ध, भगवान मिल जाए। क्या मिल जाए? भगवान मिल जाए। भगवान मिल गया तो सब कुछ मिल गया। और बाकी जितनी भी इच्छाएँ हैं उन सबकी पूर्ति हो जाए और भगवान न मिले, तो फायदा क्या हुआ? इसलिए बोला है कि मेरे साथ रहने वाले मेरे को नहीं पहचान पाते। जगदम्बा लम्बे समय तक भगवान का साथ निभाती है, रहती है लेकिन भगवान को पहचान नहीं पाती इसलिए महाकाली का पार्ट बजाती है, दूर हो जाती है और लक्ष्मी लम्बे समय तक भगवान के साथ नहीं रहती है। सिर्फ अंत में जा करके थोड़े समय का मेल होता है और भगवान को पहचान लेती है। तो ज्यादा प्राप्ति किसको हुई?
Baba: You like Jagdamba. Arey! Among all the desires that are fulfilled, there is only one righteous desire; you should obtain the fruit of knowledge, i.e. (meet) God. What should you get? You should meet God. When you find God, you get everything. If all other desires are fulfilled and if you do not find God, then what is the use? That is why it has been said that those who live with me are unable to recognize me. Jagdamba maintains the company and lives with God for a long time, but she is unable to recognize God; that is why she plays the part of Mahakali; she drifts far away and Lakshmi does not live with God for a long time. The meeting takes place only in the end for some time, and she recognizes God. So, who achieves more attainments?

जगदम्बा लम्बे समय तक भगवान के साथ प्रैक्टिकल साकार रूप में मिलन मेला मनाती है। तो उसकी यादगार तो बनती है। जगदम्बा का बहुत बड़ा मेला लगता है। किस बात की यादगार? बहुत लम्बे समय तक मिलन मेला मनाया है , तो उसकी यादगार बनी हुई है – जगदम्बा का मेला। इतना बड़ा मेला और कोई भी देवी–देवता का नहीं लगता।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

परंतु कौन–सी प्राप्ति से वंचित हो गई? भगवान को पहचानने की प्राप्ति से वंचित हो गई।
Jagdamba enjoys the meeting with God in practical corporeal form for a long time. So, her memorial is prepared. A very big fair of Jagdamba is organized. It is a memorial of what? She has enjoyed the meeting (with God) for a long period; so its memorial is the fair of Jagdamba. Such a big fair of any other deity is not organized. But which achievement did she become deprived of? She became deprived of the attainment of recognizing God.

समय – 45.32
जिज्ञासु – बाबा, द्रौपदी को पाँच पति क्यों दिखाये गये हैं?
बाबा – द्रौपदी जो है वो अग्नि की पैदाइश है। काम–अग्नि की पैदाइश है या योग–अग्नि की पैदाइश है? भक्तिमार्ग में कम्पिल गाँव में भक्तों ने एक बड़ा कुंड बनाया हुआ है और बताते हैं कि इस कुंड में स्वाहा–स्वाहा हुआ, राजा द्रुपद और उनकी पत्नी ने स्वाहा किया और उसमें से द्रौपदी का जन्म हुआ। अब ऐसे होता है क्या? कहाँ की यादगार है? इस संगमयुग की योग–अग्नि की यादगार है। कोई योग–अग्नि का हवन कुंड बनाया गया और उस योग–अग्नि, ज्ञान–अग्नि में से ध्रुव पद पाने वाली का जन्म हुआ। दुनियाँ कहती है कि नैया डूबी की डूबी और बाप कहते हैं – ये सत्य की नैया है। ये हिलेगी–डुलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। वो कौन–सी नैया है? वो शरीर रूपी नैया कौन–सी है जिसके लिए सारी दुनियाँ कहती है – हिलेगी– डुलेगी, खलास हो जाएगी और बाप कहते हैं – ये नैया हिलेगी–डुलेगी लेकिन डूब नहीं सकती? वो कौन–सी शरीर रूपी नैया है?
जिज्ञासु – प्रजापिता।
Time: 45.32
Student: Baba, why has Draupadi been shown to have five husbands?
Baba: Draupadi was born from fire. Is she born from the fire of lust or the fire of yog? In the path of worship, in the village Kampila, the devotees have built a big *kund* (a pit/sacrificial altar) and they say that offerings were made in this *kund* (i.e. a *yagya* was organized), King Drupad and his wife made offerings and Draupadi was born out of it. Well, does it happen like this? It is a memorial of which place? It is a memorial of the fire of *yog* of this Confluence Age. A sacrificial pit of the fire of *yog* was prepared and the one, whose post is fixed, was born from that fire of *yog*, fire of knowledge. The world says that the boat is about to sink and the Father says, this is a boat of truth. It will shake, but it will not sink. Which is that boat? Which is that body-like boat for which the entire world says that it will shake and sink, and the Father says, this boat will shake, but it cannot sink? Which body-like boat is it?
Student: Prajapita.

बाबा – नहीं। सागर में जो नैया पीपल के पत्ते के रूप में दिखाई जाती है। पीपल का पत्ता कितना हल्का–फुल्का होता है और उस हल्की–फुल्की नवैया के ऊपर कृष्ण बच्चा बिठैया है। वो कौन–सा कृष्ण है? सतयुग का या संगमयुग का? संगमयुगी कृष्ण बिठैया है। शिव बाप खिवैया है और पीपल के पत्ते की हल्की–फुल्की नवैया है। कौन–सी नवैया है? उस हल्की–फुल्की नवैया को शास्त्रों में गोवर्धन पर्वत उठाने की यादगार दिखा दी है। कौन–सी अंगुली? कनिष्ठिका। माना सबसे छोटी उँगली। क्यों?
जिज्ञासु ने कुछ कहा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: No. The boat in the form of a peepal leaf is shown in the ocean. The peepal leaf is so light and the child Krishna is sitting on that light boat. Which Krishna is that? Is it the Krishna belonging to the Golden Age or to the Confluence Age? The Confluence-aged Krishna is the one sitting on the boat. The Father Shiv is the boatman and it is a light boat of peepal leaf. Which boat is it? A memorial has been shown in the scriptures about that light boat lifting the Govardhan Mountain. Which finger? The little finger. It means the smallest finger. Why?
A student said something.

बाबा – नहीं। जो 108 की रूद्र माला है, उस रूद्र माला का सबसे छोटा आख़री मणका कौन है और पहला मणका कौन है? जगतपिता है पहला मणका और आख़री मणका है जगदम्बा। सबसे छोटी अंगुली। उस छोटी अंगुली के ऊपर 16108 का बड़ा पहाड़ उठाया जाने वाला है। सारी ब्राह्मणों की दुनियाँ की पालना होने वाली है, जिसकी यादगार सिक्खों में मनाई जाती है – "राज करेगा खालसा"। वो नैया हिल रही है, डोल रही है ; लेकिन डूब नहीं सकती। वो द्रौपदी का यादगार है। वो अग्नि से पैदा होती है। पाँच पति उसके सतीत्व को भंग नहीं कर सकते। वो कीचड़ में कमल समान पार्ट बजाने वाली है। जैसे कमल कहाँ होता है? कीचड़ में होता है और कीचड़ में से बाहर निकालो तो क्या दिखाई देगा? कीचड़ दिखाई देगा? नहीं। एक बूंद भी कीचड़ की नहीं रहती।
Baba: No. In the Rudramala consisting of 108 beads, who is the smallest last bead and who is the first bead? The Father of the world (*Jagatpita*) is the first bead and the Mother of the world (*Jagdamba*) is the last bead. The smallest finger. The big mountain of 16108 is going to be lifted on that smallest finger. The entire world of Brahmins is going to be sustained, in whose remembrance it is famous among the Sikhs that '*Raj karega Khaalsa'* (The pure one shall rule). That boat is shaking, trembling, but it cannot sink. That is a memorial of Draupadi. She is born from fire. The five husbands cannot violate her *sateetwa* (loyalty of a wife). She plays a part of a lotus in dirty water. For example where is a lotus (plant) found? It exists in dirty water and if you take it out of the dirty water, then what will be visible? Will the dirty water be seen? No. Not even a drop of dirty water remains (on it).

तो ये मन–बुद्धि का खेल है। ये माँ का पार्ट है। जैसे दस बच्चों की माँ होती है, बच्चे बड़े हो जाते हैं, 16 साल की माँ बच्चा पैदा कर देती है, पचास साल की माँ हो गई दस बच्चे पैदा कर दिए। उनमें पहला बच्चा मान लो कपूत निकला और माँ के साथ अभद्रता करता है, तो माँ उसको बच्चे के रूप में देखती है या खसम के रूप में देखती है? माँ की दृष्टि क्या रहती है? मेरा बच्चा है। बच्चे की दृष्टि भूलती नहीं है। तो ऐसे ही ये जगदम्बा का पार्ट है।
So, this is a game of mind and intellect. This is a mother's part. Suppose there is a mother of ten children; the children grow up; a 16 year old mother gives birth to a child, the mother becomes fifty years old having given birth to ten children. Suppose, the first child among them turns out to be unworthy, and acts indecently with the mother, then does the mother see him as a child or as a husband? How does the mother see him? He is my child. She does not forget to see him as a child. So, similarly Jagdamba plays the part.

सारे जगत् की आत्माएँ उसमें इस्लाम धर्म की आत्माएँ भी हैं, जिनकी माँ हैं। क्रिश्चियन धर्म की आत्माएँ भी हैं, नास्तिक धर्म की आत्माएँ भी हैं, मुसलमान धर्म की आत्माएँ भी हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान की कन्याओं–माताओं को सरेआम बाजार नंगा किया, लूटा और बेइज्जती की। उन सब की माँ है। वो माँ बच्चों के संसर्ग–सम्पर्क–संबंध में आती है, तो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

क्या उसकी भावना ये हो जाती है कि ये मेरे बच्चे नहीं हैं, मेरे पति हैं? पति की भावना हो सकती है क्या माँ की? नहीं हो सकती। तो ये बुद्धि की कमाल की बात है। बुद्धि उपराम रहती है। इस योग का नाम ही है बुद्धियोग। इसलिए कही जाती है जगदम्बा। वो भारतमाता और वो जगत् माता।

She is the mother of the souls of the entire world, including the souls of Islam religion, including the souls of Christianity, including the souls of atheist religion. They also include the souls of Muslim religion, who disrobed the virgins and mothers of India in open; they looted them and violated their modesty. She is the mother of all of them. When that mother comes in contact or relationship with the children, will she get the feeling that they are not my children but my husbands? Will a mother see (the child) as a husband? She cannot. So, this is the wonder of the intellect. The intellect remains detached. The name of this *yog* itself is the *yog* of intellect. That is why she is called Jagdamba. One is *Bharatmata* and another is *Jagat mata*.

जिज्ञासु – बाबा, दोनों एक ही हैं ना?

बाबा – एक ही कैसे होंगी? भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। ये तो नहीं कहा – जगत् माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।

जिज्ञासु – पुरानी दुनियाँ से नई दुनियाँ में ले जाता हूँ। जगदम्बा ही लक्ष्मी बनती है ना।

Student: Baba, both of them is one and the same, aren't they?

Baba: How will both of them be one? 'Bharat mata Shiv shakti avataar, anth ka yahee naaraa hai' – (Mother India – an incarnation of Shiv Shakti - this is a slogan of the end). It was not said, Wold Mother, an incarnation of Shiv Shakti, this is the slogan of the end.

Student: I take you from the old world to the new world. Jagdamba herself becomes Lakshmi, doesn't she?

बाबा – वो जिसे जगदम्बा कहा गया है, वो प्रैक्टीकल कर्म के आधार पर जगदम्बा कही गई है। माताओं के दो पार्ट हैं। एक वैष्णवी के रूप में और एक ब्रह्मा के रूप में। जो ब्रह्मा के रूप में पार्ट है, वो नीची स्टेज का पार्ट है और जो वैष्णवी का पार्ट है, वो उसके कहीं ऊँची स्टेज का पार्ट है। वो भारत माता है, जिसके लिए बोला है – एक रानी मक्खी निकलेगी उसके पीछे–पीछे सारा झाड़ जावेगा। इतनी प्योरिटी की पावर होती है। तो जगत् माता में प्योरिटी की पावर ज्यादा होगी या देवताओं की अम्माँ में प्योरिटी की पावर ज्यादा होगी? देवताओं की माँ का नाम शास्त्रों में पड़ा है अदिति और दैत्यों की अम्माँ का नाम पड़ा है दीति। दीति माने जो शरीर से खन्डित हो गई। दीति माना उनसे पैदा हुए दैत्य और अदिति माना जो प्रैक्टीकल जीवन में कभी भी व्यभिचारी नहीं बनी। वो है अदिति । वो भारत माता और वो जगत् माता। इसलिए दो माताएँ हो गईं। एक जगदम्बा उससे सब मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। वो विधर्मी होते हैं जो सब मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं या स्वधर्मी होते हैं? वो तो विधर्मी आत्माएँ हैं।

Baba: The one who is called Jagdamba, has been given the name on the basis of practical karma. There are two roles of mothers. One is in the form of Vaishnavi and one is in the form of Brahma. The part in the form of Brahma is a part in lower stage and the part of Vaishnavi is a part in a much higher stage. She is the Mother India (*Bhaarat mata*) for whom it has been said that a queen bee will emerge, behind whom the entire tree (of souls) will follow. She has so much power of purity. So, will the World Mother have more power of purity or will the mother of the deities have more power? The name of the mother of deities has been mentioned in the scriptures to be Aditi and the name of the mother of demons has been mentioned as Diti. Diti means the one who became impaired (*khandit*) through the body. Diti means the one who gave birth to *daitya* (demons) and Aditi means the one who never became adulterous (*vyabhichaari*)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

in the practical life. That is Aditi. That one (Aditi) is Mother India and this one (Diti) is World Mother. That is why there are two mothers. One is Jagdamba; everyone fulfills all their desires through her. Are those, who fulfil all their desires vidharmis (belong to a religion opposite to the religion established by the father) or *swadharmis* (belong to a religion which orginates in India but has practices opposite to those taught by the father.)? They are *vidharmi* souls.

समय– 54.05
जिज्ञासु – बाबा, शंकर के आस–पास जो भी देवी–देवता बैठते हैं, उनको रुद्रगण कहा जाता है।
बाबा – क्यों पार्वती नहीं रहती है?
जिज्ञासु – सिर्फ पार्वती को छोड़के।
बाबा – अच्छा, हाँ।
Time: 54.05
Student: Baba, the deities sitting around Shankar are called Rudragan.
Baba: Doesn't Parvati sit beside him?
Student: Except Parvati.
Baba: OK, continue.

जिज्ञासु – तो पार्वती क्या रुद्र बाप की बच्ची नहीं बनती ह ? पार्वती को क्यों छोड़ देते हैं?
बाबा – पार्वती तो चंद्रवंश से आती है। सूर्यवंश से थोड़े ही आती है। जो सूर्यवंशी मणके हैं, वो सब रुद्र माला के मणके हैं, शिव के बच्चे हैं। जो रुद्र माला के मणके हैं, वो सब शिव के बच्चे हैं। सूर्यवंशी बच्चे हैं। उनमें चंद्रवंशी कोई भी नहीं है और जो पार्वती आती है, राधा आती है, वो कहाँ से आती है? चंद्रवंश से आती है।
Student: So, does Parvati not become the daughter of Father Rudra? Why is Parvati left out?
Baba: Parvati comes from the Moon Dynasty (*Chandravansh*). She does not come from the Sun Dynasty (*Suryavansh*). The *Suryavanshi* beads are the beads of the *Rudramala*, they are the children of Shiv. The beads of *Rudramala* are all children of Shiv. They are *Suryavanshi* children. Among them none belongs to the Moon Dynasty. And where does Parvati or Radha come from? She comes from the Moon Dynasty.

समय – 55.10
जिज्ञासु – बाबा, जो पार्वती है उसको तो पहले रुद्र रूप लेना पड़ेगा ना? उसके बाद वो सम्पूर्णता को प्राप्त करेगी। पहले–पहले सबको तो रुद्र रूप धारण करना पड़ेगा ना क्योंकि सम्पूर्णता को पाने के लिए .....।
बाबा – पार्वती यही रुद्र रूप धारण करती है कि वो अपने देहभान को यज्ञ में स्वाहा कर देती है। देहभान को स्वाहा करना, ये सबसे बड़ा बलिदान है।
Time: 55.10
Student: Baba, Parvati will have to first assume the form of Rudra, won't she? After that she will attain perfection. First of all everyone will have to assume a form of Rudra, won't they? Because in order to achieve perfection.....
Baba: Parvati attains a form of Rudra in a sense that she sacrifices her body consciousness in the *yagya*. Sacrificing the body consciousness is the biggest sacrifice.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 55.54
जिज्ञासु – बाबा, 2008 जून को पुरुषार्थ खत्म हो जाएगा?
बाबा – अनुमान के आधार पर नुकसान होता है।
जिज्ञासु – कैसेट में बोला गया है।
बाबा – कोई कैसेट में नहीं बोला गया कि 2008 जून को ऐसा हो जाएगा। कौन–सी कैसेट में बोला है? तारीख–वारीख बताएँगे?
Time: 55.54
Student: Baba, will efforts end in June, 2008?
Baba: Making guesses is harmful.
Student: It has been said in a cassette.
Baba: It has not been said in any cassette that it will happen like this in June, 2008. In which cassette has it been told? Will you tell the date, etc.?

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info